मेरी नजर में सौरभ कुमार चालिहा

❐ **दिनकर कुमार**

सौरभ कुमार चालिहा की कहानियों से मेरा पहला परिचय उस समय हुआ था जब आज से लगभग चौदह साल पहले नेशनल बुक ट्रस्ट ने मुझे उनकी स्वनिर्वाचित गल्प नामक पुस्तक का अनुवाद करने का दायित्व सौंपा था। जैसे-जैसे मैं उनकी कहानियों को पढ़ता गया, मुझे एक अलग किस्म का अनुभव होता गया। कहानियां बिल्कुल अलग थी, अनूठी और पाठक के तौर पर मेरे अंदरुनी जगत को झकझोर देती थी। कभी कविता की तरह संवेदना के तारों को झंकृत करती थी, कभी किसी कलाकृति की तरह मंत्रमुग्ध होने के लिए विवश करती थी। मुझे लगा कि मैंने इससे पहले ऐसी अद्‌भुत रचनाएं नहीं पढ़ी थीं। इन कहानियों की बुनावट इस कदर कसी हुई थी कि अगर सावधानी के साथ इनका अनुवाद नहीं किया जाता तो इनके सौंदर्य को हू-ब-हू हिंदी के पाठकों तक पहुंचा पाना संभव नहीं हो सकता था। उसी दौरान मैंने अपने परिचित लेखक भूपेंद्र नारायण भट्टाचार्य से इस कार्य की चर्चा की। उन्होंने कुछ दिनों के बाद बताया कि हिंदी में होने वाले अनुवाद के बारे में उन्होंने सौरभ कुमार चालिहा से बात की है और चालिहा ने कहा कि कहीं परेशानी होने पर मैं फोन पर उनसे बात कर सकता हूं। यह बात सुनकर मुझे तसल्ली मिली। लेकिन जैसे-जैसे मैं अनुवाद करता गया, मुझे कहीं किसी रुकावट का सामना नहीं करना पड़ा और इस तरह मुझे लेखक को फोन करने की जरूरत भी महसूस नहीं हुई।

जब यह पुस्तक हिंदी में प्रकाशित हुई तो बहुत कम समय में इसका पहला संस्करण बिक गया। देश के कई भागों से मेरे मित्रों और पाठकों ने समय-समय पर मुझे बताया कि उन्हें पता ही नहीं था असमिया भाषा में सौरभ कुमार चालिहा जैसे असाधारण कहानीकार भी हैं, जिनकी कहानियां विश्वस्तर की लगती हैं और उन्होंने शिकायत की कि इतने शक्तिशाली कहानीकार का अच्छी तरह प्रचार क्यों नहीं किया जाता।

फिर कुछ दिनों बाद गुवाहाटी में एक अनुवाद कार्यशाला आयोजित हुई, जहां मेरी मुलाकात एक दुबले और लंबे वृद्ध से हुई। जब उनको पता चला कि मैंने सौरभ कुमार चालिहा की कहानियों का अनुवाद किया है तो अगले दिन वे मेरे लिए दो मोटी पुस्तकें लेकर आए- एक सौरभ कुमार चालिहा रचना समग्र और दूसरी रमा दास रचना समग्र। मैंने उनसे परिचय पूछा तो उन्होंने अपना नाम नहीं बताया, बोले कि मैं सौरभ कुमार चालिहा का एक मित्र हूं।

एक कहानीकार के रूप में सौरभ कुमार चालिहा मुझे कैसे लगते हैं, अगर यह सवाल मुझसे पूछा जाए तो मैं कहना चाहूंगा विश्व के जो चार-पांच कहानीकार मुझे बेहद अच्छे लगते हैं, जैसे

एंटोन चेखव, ओ हेनरी, मोपांसा, सआदत हसन मंटो और फणिश्वरनाथ रेणु, इसी श्रेणी में मुझे सौरभ कुमार चालिहा भी नजर आते हैं, जो किसी भाषा, राज्य, जाति, सरहद के बंधन से अलग एक 'यूनिवर्सल' लेखक हैं, जिनकी कहानियों में वर्णित मनुष्य की वेदना समूची मानवता की वेदना लगती है।

हिंदी में लगभग एक सौ साल पहले एक कहानी प्रकाशित हुई थी, जिसका शीर्षक था 'उसने कहा था।' यह एक प्रेम कहानी थी और इसे आज तक हिंदी की सर्वश्रेष्ठ कहानी का दर्जा प्राप्त है। इसके लेखक चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने जीवन भर में सिर्फ तीन कहानियां लिखी थी, इसके बावजूद वह अमर हो गए। अगर सौरभ कुमार चालिहा ने 'अशांत इलेट्रोन' 'शेष अनुरोध' या 'गुलाम' जैसी एक कहानी ही लिखी होती तो भी वे असमिया साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कहानीकार माने जाते । मगर उन्होंने छह दशकों तक लेखन को जारी रखते हुए एक से बढ़कर एक कहानी लिखी- यह कोई मामूली बात नहीं है। ऐसी उत्कृष्ट रचनाएं कोई जीनियस ही लिख सकता है और इस मायने में सौरभ कुमार चालिहा वर्तमान समय के एक महान जीनियस कहानीकार थे।

कहानीकार सौरभ कुमार चालिहा एक सूफी फकीर की तरह लगते हैं,जिस फकीर को दुनिया की सारी हकीकत मालूम है, जीवन के रहस्य की पकी जानकारी है, वह मनुष्यों को तुच्छता की गर्त में डूबते हुए अच्छी तरह देख सकता है। जैसे मिर्जा गालिब ने कहा था- बनाकर वेश फकीरों का गालिब, तमाशा ए अहले-चमन देखते हैं। सौरभ कुमार चालिहा भी दुनिया का तमाशा अच्छी तरह देखते हैं और कहानी कला के दोतारे पर प्रेम और करुणा की तान छेड़ते हुए आगे निकल जाते हैं।

सौरभ कुमार चालिहा की कहानियों को पढ़ने के बाद आपको ऐसा महसूस होता है मानो आपने अभी-अभी बाख या मोजार्ट की सिंफनी सुनी हो, आपने अभी-अभी बिस्मिल्ला खान की शहनाई सुनी हो या भीमसेन जोशी का कोई आलाप सुना हो, जैसे आप अभी-अभी मौसम की पहली बारिश में भीग गए हैं और आपकी आंखों के सामने इंद्रधनुष उभरकर आ गया है, आपने जैसे अभी-अभी किसी बज्जे के मुंह से पहला संबोधन सुना है- ऐसा अनुभव, जिसे केवल महसूस किया जा सकता है, शदों में व्यत नहीं किया जा सकता।

ऐसे अमर कहानीकार को मेरा शत-शत नमन।